International Journal of Applied Research 2020; 6(11): 174-175

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2020; 6(11): 174-175
www.allresearchjournal.com
Received: 02-11-2020
Accepted: 19-11-2020

डॉ० कुमारी शबनम
सहायक प्राध्यापक, गृह विज्ञान विभाग, सुपौल, वासुदेवपुर चंदेल, पटोरी, समस्तीपुर, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ० कुमारी शबनम
सहायक प्राध्यापक, गृह विज्ञान विभाग, सुपौल, वासुदेवपुर चंदेल, पटोरी, समस्तीपुर, बिहार, भारत

समस्तीपुर शहर का आर्थिक, सामाजिक स्थिति का अध्ययन तथा इसका कुपोषण से संबंध

डॉ० कुमारी शबनम

प्रस्तावनाः

समस्तीपुर शहर, दरभंगा कमिश्नरी का एक जिला है। पूर्व में यह दरभंगा जिला का एक सबडिविजन मात्र था, लेकिन बाद में बिहार सरकार के जिला पुर्नगठन कानून के अन्तर्गत बिहार के अनेक जिलों का जो पुर्नगठन हुआ। उसमें क्षेत्र इत्यादि के आधार पर नये जिलों का प्रादुभाव हुआ।

समस्तीपुर जिला दरभंगा के दक्षिण भाग में पड़ता है। पूर्व में जब समस्तीपुर, दरभंगा एवं मधुबनी तीनों सबडिविजन मात्र थे तो इनका जिला मुख्यालय कोर्ट–कचहरी तथा अन्य व्यवहारिक दृष्टिकोण से इसका सभी मुख्यालय दरभंगा ही था। लेकिन इसके स्वयं स्वतंत्र जिला क्षेत्रों के साथ–साथ इसका जिला मुख्यालय, कोर्ट–कचहरी सभी कुछ समस्तीपुर ही हो गया और यह अब एक स्वतंत्र जिला हो गया है।

पुराने दरभंगा जिला का जब समस्तीपुर, मधुबनी एवं दरभंगा जिलों में बटवारा हुआ तो बिना किसी भेदभाव के स्वतः पूर्व की स्थिति के ही आधार पर मधुबनी, सरस्वतीयुक्त हुआ और समस्तीपुर लक्ष्मीयुक्त हो गया, लेकिन बीच में पड़नेवाला यह दरभंगा लक्ष्मी और सरस्वती दोनों से अपेक्षाकृत वंचित हो गया। इसमें किसी कानून अथवा किसी ने विदेश के फलस्वरूप ऐसा नहीं हुआ, बल्कि जो स्थिति थी उसी के आधार समस्तीपुर दरभंगा एवं मधुबनी से उपेक्षाकृत अधिक आर्थिक सम्पन्न हो गया। समस्तीपुर की भौगोलिक स्थिति कुछ इस प्रकार की है कि इसे स्वतः दरभंगा मधुबनी की उपेक्षा आर्थिक रूप से सम्पन्न बना देता है। यहाँ की मिट्टी केवाल है। तथा सतह भी ऊँची है जिसे नगदी फसलों की उपज काफी अच्छी होती है। तम्बाकु, मिरचाई, हल्दी, प्याज, लहसुन एवं विभिन्न प्रकार की सब्जियाँ, मकई, चना मुख्य फसले है। रवी में गेहूँ भी काफी अच्छा उपजता है। सरैसा में जमीन की सतह अपेक्षाकृत ऊँची होने के कारण धान की फसल कुछ कम होती है। यद्यपि यहाँ नीची जमीन की भी बहुतायत है लेकिन वह जहाँ तहाँ उतनी नीची है कि वह सालों भर पानी में डुबा रहता है तथा चौर जमीन हेतु अनुशंसित धान की किस्में भी काफी अधिक उपर्युक्त नहीं हो पाती है। यद्यपि इस और कुछ किये जा रहे है तथा चौर की नीची जमीन को समतल करने का प्रयास सरकार का भी प्रयास जारी है तथापि अभी काफी अधिक जमीन पानी के नीचे डुबी रहती है जिसका अगर सही ढ़ंग से उपयोग हो जाय तो इसका फसल में अप्रत्यासित वृद्धि हो जाएगी एवं धान की उपज भी बढ़ जायेगा तथा क्रमशः दूसरे– दूसरे फसलों की उपज में भी वृद्धि होगी। अभी इस नीची जमीन में सना पटुआ, कहीं कहीं सिंघारा एवं मछली का पालन होता है। लेकिन मछली पालन हेतु भी इन नीची जमीन का उपयोग वैज्ञानिक तरीके से नहीं हो पाता है, क्योंकि पानी के आवा–जाही का कोई ठोस रूप नहीं है, क्षेत्र काफी बड़ा है तथा जंगल खर पतवार उसे सालों भर घेरे रहता है। फिर बाढ़ के पानी का भयंकर भय इस बात की आशंका बराबर पैदा करती रहती है कि सिंघारा या मछली कब पानी की धारा में बह जायेगी, इसका कोई निश्चित समय नहीं है।

समस्तीपुर जिला में दरभंगा की ही भाँति बाढ़ आने का कोई निश्चित समय नहीं है। यह निर्धारित एवं उम्मीद की गयी अवधि से पहले भी आ जाती है और तब बाढ़ का प्रकोप सामान्यतः समाप्त हो गया रहता है तब भी कभी–कभी विकट पाहुन होकर पहुँच जाती है। अतः लोग बाढ़ के प्रति काफी उदास एवं भयभित रहते हैं जिसमें जान–माल की काफी क्षति होती है। कभी कभी तो सारा गाँव ही बाढ़ की चपेट में आकर वह जाता है तथा गाँव का सारा पशुधन, लगभग पूरी जनसंख्या तथा सारी सम्पति या तो पूर्णतः बर्बाद हो जाती है या स्थिति इतनी बिगर जाती है कि इसके सँवारने का साहस ही नहीं हो पाता। सूखा का प्रकोप इस जिले की आवादी पर अपेक्षाकृत कम पड़ता है क्योंकि कृष्क काफी मेहनती है और फसल नगदी उपजने के कारण सभी कृष्क अपने सामर्थ्य के अनुसार काफी परिश्रम करते हैं सिंचाई साधन का पर्याप्त व्यवस्था है। सिंचाई की व्यवस्था सरकारी स्तर एवं निजी स्तर को मिलाकर इस स्तर कि है कि लगभग सभी छोटे बड़े कृषकों की जमीन का

पटवन हो जाता है। प्राकृतिक रूप से सूखा पड़ने पर फसल का कुछ न कुछ हद तक सिंचाई का सुविधा उपलब्ध रहने पर भी प्रभावित हो जाना स्वभाविक है तथापि यह उस हद तक प्रभावित नहीं होता है जिस हद तक दरभंगा या मधुबनी जिले का हो जाते है। दरभंगा एवं मधुबनी में चुँकि सिंचाई की उतनी सुविधा उपलब्ध नहीं है अतः सूखे का पूरा कोप भाजन यहाँ के कृषकों को बनना पड़ता है।

समस्तीपुर में उत्पादित नगदी फसल एवं सब्जी इत्यादि भी काफी विस्तृत है। उद्गम से सब्जी इत्यादि केन्द्रीय स्थान जैसे बाजार हाट इत्यादि तक ले जाने की व्यवस्था अच्छी है। छोटे बड़े सभी परिवहनों द्वारा इसे ढ़ोकर गन्तव्य स्थान तक ले जाने में कोई खास असुविधा नहीं। समस्तीपुर की उपजाऊ सब्जी का मार्केट दरभंगा, बेगुसराय एवं मधुबनी तक फैला हुआ है। सब्जी उत्पादन स्वयं या अपने परिवार के विभिन्न सदस्यों की सहायता से वे रेलवे यातायात में समान काफी मुस्तैदी एवं चुस्ती से विक्री केन्द्र तक पहुँचा देते है जिस हेतु उन्हें परिवहन व्यय के रूप में अपेक्षाकृत काफी कम खर्च पड़ता है। पेसेंजर को काफी असुविधाओं का सामना भले ही करना पड़ता है।

समस्तीपुर शहर की सड़कों की स्थिति अत्यधिक अच्छी नहीं तो संतोषप्रद अवश्य कहा जा सकता है। सरकार के नवप्रयास के फलस्वरूप पूरे शहर में सड़क का पक्कीकरण, खरंजाकरण एवं नालीकरण हो गया है तथा जो कुछ बाँकी है वह भी कार्य की ओर अग्रसर है। देहाती क्षेत्रों में भी सड़कों की स्थिति में काफी सुधार हुआ है तथा अतिक्रमण इत्यादि को हटाकर सरकार ने नये सिरे से सड़क की नापी इत्यादि करवाकर उसे व्यावहारिक वादे के उपयोगयुक्त बनाया है। पहले की अपेक्षा समस्तीपुर में सड़कों की स्थिति काफी अच्छी हुई है तथापि 30–35 प्रतिशत कार्य अभी भी सम्पन्न करने हेतु बाँकी है जिस ओर सबो का ध्यान केन्द्रित है।

आर्थिक रूप से अगर पूछा जाय तो किसी भी सम्पन्न से सम्पन्न या निम्न से निम्न स्थानों में अमीर–गरीब अवश्य होते है। आर्थिक समानता का होना एक वैदान्तिक तथ्य ही होता है। वहाँ भी लोग आर्थिक रूप से सभी व्यक्ति समान रूप से न तो सम्पन्न होते है और न निर्धन होते हैं। सम्पन्न एवं निर्धन सभी जगह लोग होते ही है। यहाँ भी यही स्थिति है। अपने आप में स्वतंत्र रूप से अगर देखा जाय तो मोटा–मोटी समस्तीपुर के लोग निर्धन नहीं कहे जायेंगे, वैसे समानता की तो कोई सीमा नहीं होती है। अगर दरभंगा और मधुबनी के लोगों से यहाँ के लोगों की आर्थिक समानता की तुलना की जाय तो समस्तीपुर, इन दोनों जिलों की अपेक्षा आर्थिक रूप से सम्पन्न जिला की श्रेणी में आयेगा। इसका कारण यहाँ की भौगोलिक स्थिति कृषकों के मनोबल एवं मेहनत तथा कृषि कार्य हेतु स्वयं को साधन सम्पन्न बनाने की इच्छा एवं क्षमता है।

उपज :– समस्तीपुर में मकई, तम्बाकु, दलहन, तिलहन शकरकंद, हल्दी, प्याज लहसुन एवं लगभग सभी प्रकार की सब्जियाँ मुख्य है। दियारा की जमीन में परवल एवं करेला एवं कदु का खेती काफी अच्छी होती है तथा आय का यह प्रमुख श्रोत मानी जाती है। इस की खेती सरकार धारावेले के भुगतान के प्रति कुछ उदासीनता करने के कारण कम होती है। इसका उदाहरण यह है कि सम्पूर्ण जिले में चीनी मिल हसनपुर में कार्यरत है जबकि समस्तीपुर चीनी मिल जो लगभग शहर क्षेत्र में ही अवस्थित है वह अब लगभग दसों साल के बंद पड़ा है। ऐसा नहीं है कि इस उपजने वाले क्षेत्रों में लोगों ने अपना को पिंज पैटर्न सूक्ष्म ही बदल लिया है और इस की खेती पूर्णरूप से छोड़ ही दी है। तथापि यह भी तत्व है कि लोग इस नगदी फसल की ओर से अपना मुँह फेड़ने लगे हैं तथा छोटे पैमाने पर काफी कृषक इस फसल को उपजाते हैं वे इस फसल को अपने स्तर से कोल्हु एवं एच0 पी0 के मशीन द्वारा इसे पेर कर गुड़ ''छोआ'' एवं अन्य देशी समान बनाकर बेचते है जिसकी बिक्री स्थानीय स्तर पर ही काफी अधिक पैमाने पर हो जाती है और थोड़ा बहुत जो कुछ बच जाता है। इस उसका भी मार्केट काफी प्रवल है जिसमें कृषकों को अपने सामानों को बेचने हेतु कठिनाई महसूस नहीं करनी पड़ती है। यह बात अवष्य है कि कृषकों को अधिक पैमाने पर एवं एक मुष्त पैसा उपलब्ध नहीं हो पाता है तथापि कृषक अपनी उपलब्धि में प्रयत्न ही दिखते है। गेहूँ के नये प्रभेदो की यह जन्मभूमि रही है। समस्तीपुर में कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना से यहाँ के उत्सुक किसानों के हेतु यह वरदान स्थापित हुआ है। नये नये उन्नत प्रभेदों के विभिन्न फसलों के बीज आसानी से उपलब्ध हो जाते है। जिससे कृषकगण अपने पुराने बीजों को लगा कर नये बीजों में समान लागत लगाकर भी लगभग 40 प्रतिशत से अधिक उपज एवं आय प्राप्त कर लेते है। इसके अतिरिक्त यहाँ हरेक प्रखंड स्तर जिला एवं सवडिविजन स्तर पर कृषि शिक्षण केन्द्र उपलब्ध है। जहाँ से कृषकों को अपने कृषि कार्य हेतु लगभग सभी प्रकार की तकनीकी ज्ञान उपलब्ध हो जाता है और जो कृषक जिस हद तक इस ज्ञान का उपयोग करना चाहते है और जिनकी जैसी परिस्थिति है इस अनुसार उनको कृषि कार्यो में सफलता मिलती है।

समस्तीपुर में छोटी मोटी एवं बड़ी नदियों की बहुतायत है। गंडक के किनारे यह बसा जिला गंडक के पानी और उसमें उपलब्ध मछलियाँ के भंडार से यह सालों भर लाभान्वित होता रहता है। सिंचाई का भी यह प्रमुख साधन है एवं साथ ही साथ यह बालु एवं छोटे छोटे सामानों को नाव से ढ़ोने हेतु भी काफी उपयोगी रहा है। चुँकि यहाँ बहुत अधिक आदर एवं चौर जमीन है जिसमें लगभग सालों भर पानी लगा रहता है अतः यह छोटी एवं बड़ी मछलियों का उत्पादन केन्द्र है। मछलियों की बहुतायत है। इसके अतिरिक्त खाद्य पदाथों में मुर्गा, खस्सी का मांस एवं विभिन्न चिड़ियों का मांस आर्थिक रूप से उन्नत लोग हेतु उपलब्ध है।

पोषण अथवा कुपोषण किसी स्थान की आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थिति के साथ अनुवांसिक रूप से जुड़ा हुआ होता है। जो समाज जितना ही आर्थिक एवं सामाजिक रूप में सक्ष्म होता है, उसमें पोषण की मात्रा भी उतनी ही संतोषप्रद मानी जा सकती है। लेकिन यह सदैव सत्य नहीं होता है। कुपोषण कम मात्रा में पोषक तत्वों को लेने की स्थिति में ही नहीं होता है, बल्कि पोषक तत्वों को अधिक मात्रा में लेने में भी विभिन्न पदार्थों का शरीर में आवश्यकतानुसार प्राप्त करने अथवा मांग के अनुसार संतुलन बिगड़ जाने की स्थिति में भी कुपोषण होता है। कम खाना उतना हानिकारक नहीं है जितना आवश्यकता से अधिक खा लेना, संसार के आँकड़े बताते है कि कुपोषण के संदर्भ में अधिक खाने वालों की अधिक मृत्यु हुई है वनस्पति के कम खाने वालों की उपेक्षा अधिक खाकर मरने वालों की संख्या पाश्चात्य देशों की संस्कृति का परिचायक है, जहाँ साथ खाना पीना ही जीवन कर उद्देश्य है। गरीबी साधना मितव्ययिता हमारी संस्कृति है जहाँ कम से कम लोग कुपोषण के उपरान्त भी इसकी चपेट में आते हैं। अनेक जगहों की ही तरह समस्तीपुर में भी पोषण, कुपोषण एवं संतुलित आहार संबंधी शिक्षा या ज्ञान देने वाले संस्थानों की कमी है जिस कारण भोजन के उपलब्धता के बावजुद भी कुपोषण बहुत हद तक व्याप्त है। इसका निराकरण जनजागरूकता स्वास्थ्य केन्द्रों की क्रियाशीलता एवं सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थानों की प्रतयनशीलता से इसे बहुत हद तक दूर किया जा सकता है।

संदर्भ सूचि :–

1. पोषण एवं पोषहार – मंगला कानगो।
2- Health Nutrition & Disedses – C. Chatterjee
3- Foundetion of Nutrition – B. Sebaival
4. सामाजिक अनुसंधान एवं शोध – मोहम्मद सुलेमान
5. आहार एवं पोषण विज्ञान – डा0 प्रमीला वर्मा